गुरु नानक – सबद ३७

धरम खंड का एहो धरमु ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ७

धरम खंड का एहो धरमु ॥
गिआन खंड का आखहु करमु ॥
केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥
केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥
केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥
केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥
केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥

सार: कोई स्वयं को और अपने आस-पास की दुनिया को किस प्रकार देखता है, यह उसकी सच्चाई को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्वयं के बारे में धारणा इस बात को प्रभावित करती है कि वह दूसरों के साथ कैसा व्यवहार रखता है और निर्णय लेता है। जब कोई अपनी शक्तियों और कमज़ोरियों को स्वीकार करता है और ऐसे विकल्प का चुनाव करता है जिससे उसे और उसके आसपास के लोगों को लाभ हो, तो उसमें आत्म-मूल्य का एक गहरा एहसास विकसित होता है और वो दूसरों को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

धरम खंड का एहो धरमु ॥
नेकी के खंड में आत्म-चिंतन का अभ्यास, नैतिक कर्तव्य के रूप में प्रचलित है।

गिआन खंड का आखहु करमु ॥
विवेक का खंड करमों का मार्गदर्शन कर सकता है।

केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥
वायु, जल और आग की कई अवस्थाएँ हैं, और कई दिव्य प्राणी हैं।

केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥
सृष्टिकर्ता के अनेक रूप प्रकट और अवतारित हैं जो कई रूप, रंग-बिरंगे परिधानों में सजे हैं।

केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥
भूमि और पहाड़ों पर गतिविधि के कई खंड हैं, कई अलग-अलग विचारधाराएं हैं।

केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥
अनेक आकाश, चंद्रमा और सूर्य हैं, अनेक विविध ब्रह्मांड और खंड हैं।

केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥
कई कुशल, बुद्धिमान और प्रबुद्ध गुरु हैं, विविध वेशभूषा में कई दिव्य स्त्री शक्तियाँ हैं।

केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥
कई दिव्य पुरुष शक्तियां, राक्षस, ऋषि, कई विविध मूल्यवान संसाधन हैं।

केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥
जीवन के कई स्रोत हैं, संचार के कई तरीके हैं, कई सम्माननीय राजा हैं।

केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥
चिंतन करने वाले बहुत हैं, भक्त बहुत हैं। नानक कहते हैं कि असीमता की कोई सीमा नहीं है। (३५)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि प्रकृति की कोई सीमा नहीं है; अनगिनत शास्त्र, कई जीवन शैली और मनुष्य के अद्वितीय गुण हैं। उनका सुझाव है कि हमारे काम और इरादों पर सचेत प्रतिबिंब

ही एक धार्मिक, पूर्ण और उद्देश्यपूर्ण जीवन के लिए एकमात्र सच्चा मार्गदर्शक और गुणी गुण है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com